REVIEW OF RESEARCH

# मदरसा के शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

शमीमा अंसारी

शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

**प्रस्तावना :**

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य मदरसा के शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति का प्रशिक्षण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध कार्य वर्णात्मक सर्वेक्षण शोध विधि पर आधारित है। प्रतिदर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी जिले के पाँच मदरसों के 92 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन प्रविधि के द्वारा किया गया। आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित "शिक्षकों की नवाचार के प्रति अभिवृत्ति मापनी" का निर्माण किया गया। संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुआ कि मदरसे के शिक्षकों का नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। साथ ही प्रशिक्षत एवं अप्रशिक्षित शिक्षक का नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति समान अभिवृत्ति रखते हैं।

वैज्ञानिक तकनीकी विकास तथा भूमंडलीकरण तत्व के परिणाम स्वरूप विश्व में तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है और इस परिवर्तन के असर से शिक्षा भी अछूता नहीं है। जन-शिक्षा का भी सम्पूर्ण शिक्षा पर प्रभाव पड़ा है. औद्योगीकरण, जनसंचार तथा यातायात के साधनों ने जनसंख्या की गतिशीलता बढाई है . इसी के साथ ही ज्ञान का विस्फोट भी अति तीर्व गति से हुआ परिणामस्वरुप शिक्षा के क्षेत्र में भी एक नई विद्या का जन्म हुआ जिसे शिक्षा तकनीकी, शैक्षिक तकीनीकी कहते हैं तथा नवीन शिक्षण विधियों का विकास हुआ जिसने शिक्षा के विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया और इसे ही शिक्षा में नवाचार की संज्ञा दी गयी . इस नवीन शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थिओं को साक्षर बनाना नहीं बल्कि उन्हें तार्किक चिंतन सुशिक्षा एवं आत्म निर्भर बनाना है. इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों में सृजनात्मकता का विकास हो . कक्षा का वातावरण रूचिकर हो। बर्स (1989) भी इस बात की पुष्टि करते है कि सीखने की क्रिया अधिगमकर्ता एवं अधिगम के वातावरण के बीच अन्तः क्रिया के द्वारा ही होती है । शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर बनाने के लिए आवश्यक है शिक्षा का आदान-प्रदान नवीन शिक्षण विधियों के द्वारा किया जाये जिससे शिक्षा बोझ और उबाऊ के बजाय उनके लिए एक मजेदार और रोमांचक बन जाना चाहिए। यह उनकी संवृद्धि का एक अभिन्न हिस्सा है और उन्हें अच्छे नागरिक बनने में मदद करता है वैज्ञानिक शोधों से भी यह स्पष्ट हुआ है कि नवाचारी शिक्षण विधियाँ विद्यार्थिओं के अधिगम प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है

मदरसा शिक्षा भारत समेत विश्व की प्राचीन शिक्षा पद्धति है। भारतीय जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मदरसे में शिक्षा प्राप्त करता है। मदरसा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र होते हैं- इसके दो मुख्य अभिकरण होते हैं मकतब तथा मदरसा। मकतब में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है तथा मदरसों में उच्च शिक्षा प्रदान की जाती हैं। ये प्रायः दो अर्थों में लिए जाते हैं सामान्य अर्थ में विद्यालय तथा दूसरे अर्थ में एक ऐसा शिक्षा संस्थान जो धार्मिक शिक्षा प्रदान करता है, परंतु यह केवल कुरान और हदीस तक ही सीमित नहीं(इन्सैक्लोपिडिया ऑफ़ इस्लाम, 1974)। अतः हम कह सकते हैं कि मदरसा एक ऐसा शिक्षा संस्थान है जो धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है। इस शोध का उद्देश्य मुस्लिमों द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थान मदरसे के शिक्षकों की नवीन शिक्षण विधियों

के प्रति उनकी अभिवृत्ति को जानना है। अभिवृत्ति व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है, जिसके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति, संस्था या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करता है। अभिवृत्ति का विकास जन्मजात नहीं अपितु सामाजिक अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप होता है (अनवर एवं इकबाल, 2012)। व्यक्ति के मन की वह विशेष वृत्तियाँ जो किसी व्यक्ति, पदार्थ, संस्था, परिस्थिति या विचार के प्रति व्यक्ति के आचरण का स्वरूप निर्धारित करती है, जिसके कारण मनुष्य इन वस्तुओं के प्रति अपनी कोई विशेष धारणा अथवा विचार बना लेता हैं, अभिवृत्ति कहलाता है (भटनागर, 2013)। अभिवृत्ति सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है (साल्टा एवं टोजुगर्की, 2004)। वर्तमान में शिक्षा समय के साथ परिवर्तित हो रही है नयी नयी शिक्षण पद्धति, नवाचार एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है तो मदरसा शिक्षा किस हद तक इस आधुनिक शिक्षा के अनुरूप है एवं साथ ही नवाचार के प्रति मदरसा के शिक्षक एवं छात्र की क्या अभिवृत्ती रखते हैं इसको जानने का प्रयास इस शोध पत्र में किया गया है।

## समस्या कथन

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है कि मदरसे के शिक्षक नवाचार के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं अथार्त सकारात्मक या नकारात्मक।

## प्रयुक्त शब्दों की क्रियात्मक परिभाषा

क्रियात्मक परिभाषा से तात्पर्य चर को मापने के लिए गतिविधियों और कार्यों को निर्दिष्ट करने से है। एक परिचालात्मक परिभाषा जांचकर्ता को निर्देश देने का एक मैन्युअल है।

**मदरसा -** प्रस्तुत शोध कार्य में मदरसे से तात्पर्य मुस्लिमों द्वारा स्थापित एक ऐसेशिक्षण संस्थान से है जो धार्मिकएवं धर्मनिरपेक्ष दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है।

**शिक्षक -** प्रस्तुत लघु शोध में शिक्षक से अभिप्राय मदरसे में पढ़ाने वाले शिक्षकों से हैं।

**अभिवृत्ति -** प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति का किसी एक विषयवस्तु व व्यक्ति के प्रति एक विशेष अर्जित अनुभवबद्ध तथा स्थिरीकृत संवेगात्मक प्रवित्ति से है।

**नवाचार -** प्रस्तुत शोध में नवाचार से तात्पर्य आधुनिक शिक्षण विधियों से है।

## शोध का औचित्य

आधुनिक युग में शिक्षा को अधिक उत्पादक एवं गुणवत्तापूर्ण स्वरूप प्रदान करने के लिए नित नए उपयोग किए जा रहें हैं। हमारी परंपरागत शिक्षा प्रणाली से अलग नई शिक्षण विधियों, पद्धतियों एवं नवीन तकनीकों के द्वारा अधिकाधिक फलदायी एवं परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करने के लिए जिन नवीन क्रियाकलापों का उपयोग किया गया है, उनमें नवाचार की विशेष भूमिका है। यशपाल समिति (1992) में बस्ते के बोझ को कम करने, पाठ्यक्रम निर्माण में शिक्षकों को अवसर देने साथ ही नवीन शिक्षण विधियों की उपादेयता पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, 2005 का मानना है कि विद्यार्थियों में रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर बोधात्मक शिक्षण के द्वारा सीखने पर बल दिया है। वस्तुतः गतिविधियों एवं क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना और उनमें कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना नवाचार की मूल अवधारणा है। नवाचार की अवधारणा पर बल देते हुए मीडिया मुगल रूपर्ट मर्डक का विचार है कि विश्व में परिवर्तन बहुत तेज़ी से हो रहा है, अब बड़े छोटे को हारा नहीं पाएंगे। अब जो तेज़ दौड़ेगा वही जीतेगा। हमें विद्यार्थियों को गतिशील, क्रियाशील बनाना है तो शिक्षण अधिगम को रोचक एवं आनंददायक बनाना होगा, अन्यथा शिक्षा की परंपरागत प्रणाली से विद्यार्थी इस गतिशीलता में आगे न बढ़ कर बहुत पीछे रह जायेंगे। आनंदमयी शिक्षण एक ऐसा उपकर्म है जिसके द्वारा विद्यार्थियों पर बिना मानसिक दबाव डाले सहज ढंग से शिक्षित कर विद्यालय का वातावरण रूचिकर कर सकते हैं जिससे विद्यार्थी एक सकारात्मक वातावरण मेंसीखते हैं।शोधार्थी द्वारा मदरसा शिक्षा से संबंधि साहित्य की समीक्षा की गयी जैसे- कासमी (2005), असमा एवं शाजिल (2015), अख्तर (2012), अंसारी (2016), रहमान (2017) पान (2014), ज़फ़र (2011), सिकंद (2005), जयरथ (2011).जाफरी (2008), अहमद (2008), झींगरन (2010), कुमार एवं रावत (2015), इश्तियाक एवं अबुहुरेरा (2014). अलजुनैद एवं हुसैन (2005), चौधरी,(2008), गोडबोले (2016), नेहल, सलमा एवं हुसैन (2016), अख्तर (2012) नाज़नीन (2014), अलजुनैद एवं हुसैन(2005). झिंगरन (2005)

द्वारा किए गए शोध अध्ययनों से पता चलता है कि मदरसा के आधुनिकीकरण, संरचना, मदरसा का इतिहास आदि पर तो शोध कार्य हुए हैं परंतु नवाचारी शिक्षण विधियों पर शोध कार्य शोधार्थी के संज्ञान में नहीं आया।अतः शोधार्थी को इस तरह के शोध कार्य करने की ज़रूरत महसूस हुई। जिससे यह पता चलेगा कि मदरसा शिक्षा वर्तमान आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कितना अनुकूल है। प्रस्तुतशोध कार्य के द्वारा कक्षा में छात्रों के सीखने की प्रक्रिया का भी पता चलेगा और साथ ही शिक्षक छात्र अन्तः क्रिया को भी जानने के लिए शोधार्थी को इस तरह का शोध कार्य करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।मदरसा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचार का प्रयोग हो रहा है या नहीं अगर हो रहा है तो वो किस स्तर तक इसे अपना रहे हैं इसके लिएप्रस्तुत शोध कार्य की ज़रूरत महसूस हुई।

## शोध उद्देश्य

**प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शोध उद्देश्यों को सम्मिलित किया गया है-**

- मदरसे के शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।
- मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करना।

## शोध परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं को सम्मिलित किया गया

- मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतरनहीं है।

## शोध में प्रयुक्त चर

- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा स्वतंत्र चर के रूप में मदरसे के शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं अप्रशिक्षण तथा आश्रित चर केरूप में नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति को लिया गया।

## शोध का परिसीमन

- प्रस्तुत शोध कार्य उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले तकही सीमित है।
- यह शोध कार्य केवल मदरसे में ही किया गया है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध समस्या की विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया हैं।

## समग्र

प्रस्तुत शोध कार्य में समग्र के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी जिले से संबंधित मदरसे के माध्यमिक स्तर के समस्तशिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

## प्रतिदर्शन प्रविधि एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श चयन हेतुसोद्देश्य प्रतिदर्शन प्रविधि का उपयोग कर प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी जिले के 5 मदरसों के शिक्षकों का चयन किया गया। चयनित प्रतिदर्श का पुनः प्रशिक्षत एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आधार पर वर्गीकरण किया गया।

**तालिका-01. प्रतिदर्श रचना को प्रदर्शित करती सारणी**

| क्रमांक स. | मदरसे का नाम | प्रशिक्षित | अप्रशिक्षित | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मदरसा हनफ़िया गौसिया बजरडीहा, वाराणसी | 10 | 7 | 17 |
| 2 | मदरसा बहरुल उलूम, छितननपुरा वाराणसी | 9 | 7 | 14 |
| 3 | मदरसा चिराग-ए-उलूम, रसूलपुरा, वाराणसी | 10 | 12 | 24 |
| 4 | मदरसा मज़हरुल उलूम पीलीकोठी, वाराणसी | 12 | 14 | 26 |
| 5 | मदरसा राशिदुल उलूम, सरइयाँ, वाराणसी | 6 | 7 | 13 |
| | **कुल योग** | 47 | 47 | 92 |

### उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा समस्या से संबन्धित कोई उपकरण उपलब्ध नहीं पाया गया। उपकरण की अनुपलब्धता के कारण शोधार्थी द्वारा स्वयं शिक्षकों की नवाचार के प्रति अभिवृत्ति जानने हेतु अभिवृत्तिमापनी (पाँच बिन्दु लिकर्ट विधि) का निर्माण किया गया है।

### परिचय (नवाचार अभिवृत्ति मापनी)

अभिवृत्ति मापनी वास्तव में मापन का एक ऐसा साधन है जिसको प्रयोज्यों पर प्रशासित करके उनकी अभिवृत्ति का मापन किया जाता है । अभिवृत्ति कथनों के एक औपचारिक संग्रहण को ही अभिवृत्ति मापनी कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में नवाचार अभिवृत्ति से तात्पर्य शिक्षकों की नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है ।

### उपकरण निर्माण की प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा नवाचार अभिवृत्ति मापनी के निर्माण प्रक्रिया को निम्नलिखित तीन चरणों में विभाजित किया गया है

### प्रथम चरण (नवाचार अभिवृत्ति मापनी का प्राथमिक स्वरूप)

नवाचार अभिवृत्ति मापनी के प्रथम चरण में शोधार्थी द्वारा अभिवृत्ति एवं नवाचार से संबंधित पूर्व में हुए शोध का अध्ययन किया गया । अध्ययन के पश्चात उपकरण के निर्माण के लिए सर्वप्रथम अभिवृत्ति से संबन्धित पदों का समूह तैयार किया गया एवं पदों के समुच्चय को भाषा की शुद्धता एवं सुबोधता के लिए कुछ संभावित उत्तरदाताओं तथा विशेषज्ञों को दिखाया गया। इनकी राय के आधार पर उचित संशोधन किया गया। जो भी पद भ्रामक अथवा असपष्ट लगे उसे प्रारम्भ में छाँट दिया गया। इस प्रकार 40 कथन का परिवर्धित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण कर प्रथम चरण पूर्ण किया गाया ।

### द्वितीय चरण (अभिवृत्ति मापनी की वैधता)

शोधार्थी द्वारा प्राथमिक प्रारूप के परिवर्धित स्वरूप हेतु उसे पुनः आमुख वैधता एवं अंतर विषय वैधता निर्धारित करने के लिए इसे पुनः विशेषज्ञों को दिखलाया गया। इस स्तर पर भी कुछ सुझाव प्राप्त हुए जिसे समावेशित करके इस अभिमतावली का निर्माण किया गया। इस अभिवृत्ति मापनी में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों कथनो का समावेश किया गया जिनका वितरण निम्न प्रकार से हैं –

**तालिका क्रमांक-02**

| क्र.सं | कथनों की प्रकृति | कथन क्रमांक | कथनों की संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | मापनी में धनात्मक एकांशों/कथनों की स्थिति | 1,2,4,6,8,10,12,13,15,16,20 | 11 |
| 2 | मापनी में ऋणात्मक एकांशों/कथनों की स्थिति | 3,5,7,9,11,14,17,18,19, | 9 |
| | कुल कथनों की संख्या | - | 20 |

उपरोक्त अभिवृत्ति मापनी में कुल 20 कथन है जिसमें 11 सकारात्मक एवं 9 नकारात्मक कथन सम्मिलित हैं।

### तृतीय चरण (मुद्रण तथा प्रशासन)

उपरोक्त मापनी के निर्माण में जो भी जानकारी प्राप्त हुई उसको मुद्रण कराया गया इसके पश्चात प्रयुक्त उपकरण का प्रशासन चयनित मदरसे में चयनित शिक्षकों पर किया गया। इसके लिए एक दिन पूर्व मदरसा के प्रधानाचार्य को सूचित किया गया। दूसरे दिन इसे कक्षा में प्रशासित किया गया। इस हेतु चयनित शिक्षकों को पृथक स्थान या कक्षा में परीक्षण के उद्देश्य एवं इसे भरने हेतु आवश्यक निर्देश से अवगत कराया गया। व्यक्तिगत जानकारी को शोधार्थी द्वारा गोपनीय रखने का विश्वास दिलाया गया। शिक्षकों द्वारा परीक्षण हल कर लेने के बाद परीक्षण को संग्रहीत कर लिया गया।

### अंकन

प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति मापनी के अंकन के लिए पाँच बिंदु लिकर्ट स्केल का प्रयोग किया गया है। इस मापनी का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का मापन करना है । लिकर्ट अभिवृत्ति मापनीस्केल में कुल 20 कथन का निर्माण किया गया । इसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार के कथन सम्मिलित हैं। प्रत्येक कथन के सामने पाँच विकल्प दिये गए हैं- पूर्णतःसहमत, आंशिक सहमत, तटस्थ, आंशिक असहमत, पूर्णतःअसहमत। जिसमें सकारात्मक कथन में पूर्णतःसहमत को5, आंशिक सहमत 4, तटस्थ 3, आंशिक असहमत 2 एवं पूर्णतःअसहमत 1 अंक प्रदान किया गया । इसी प्रकार नकारात्मक कथन में पूर्णतःसहमत को 1, आंशिक सहमत 2, तटस्थ 3, आंशिक असहमत 4 एवं पूर्णतःअसहमत 5 अंक प्रदान किया गया इन प्रदत्त अंकों को जोड़कर सारणी का निर्माण किया हैं । जो इस प्रकार है –

**तालिका क्रमांक-03**

| कर्म स. | सकारात्मक कथन को प्रतिक्रिया के आधार पर दिये गए अंक | नकारात्मक कथन को प्रतिक्रिया के आधार पर दिये गए अंक | प्रतिक्रिया श्रेणी |
|---|---|---|---|
| 1 | 5 | 1 | पूर्णतःसहमत |
| 2 | 4 | 2 | आंशिक सहमत |
| 3 | 3 | 3 | तटस्थ |
| 4 | 2 | 4 | आंशिक असहमत |
| 5 | 1 | 5 | पूर्णतःअसहमत |

### शोध उपकरण का प्रशासन एवं आंकड़ो के संग्रहण की प्रक्रिया

प्रदत्त संग्रहण हेतु सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा मदरसे के प्रधानाध्यापकों से अनुमति लेकर मदरसे के शिक्षकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबद्ध स्थापित कर उन्हें अपने नवाचारी अभिवृत्ति मापनी से अवगत कराया। तत्पश्चात शोधार्थी द्वारा शिक्षकों पर मापनी को प्रशासित किया गया

एवं शिक्षकों को यह विश्वास दिलाया गया कि उनके द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना को गुप्त रखा जाएगा। शिक्षकों को मापनीपूर्ण करने के लिए 2 से 3 दिन का समय दिया गया। तत्पश्चात मापनी का संकलन कर लिया गया ।

## प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधि

प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का उपयोग किया गया

- मदरसे के शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा प्रतिशत सांख्यिकी प्रविधिका उपयोग किया गया।
- मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने हेतुt-परीक्षण साख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया।

## प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा उपरोक्त उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग कर प्राप्त परिणामों का विस्तृत व्याख्या निम्नलिखित है-

1- शोध कार्य के प्रथम उद्देश्य मदरसे के शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए सभी शिक्षकों से प्राप्त आंकड़ों को प्रतिशत के आधार विश्लेषण किया गया। जिसे निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है-

**तालिका क्रमांक-04. समस्त शिक्षकों का नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति**

| क्र. सं. | वर्ग -अंतराल | सदस्यों की संख्या | प्रतिशत % | अभिवृत्ति का स्तर |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 61 तथा इससे अधिक | 60 | 65.21 | उच्च |
| 2 | 41-60 | 24 | 26.08 | मध्यम |
| 3 | 40 तथा इससे कम | 08 | 08.69 | निम्न |
| कुल | - | 92 | 100% | - |

उपरोक्त तालिका क्रमांक -04, के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मदरसे के कुल 92 शिक्षकों में से 60 शिक्षकों के प्राप्तांक 61 तथा इससे अधिक आये हैं। 24 शिक्षकों के प्राप्तांक वर्गान्तराल 41 – 60 के मध्य प्राप्त हुए हैं। जबकि 08 शिक्षकों के फलांक 40 या इससे कम फ्लांक प्राप्त हुए हैं। चूकीं चयनित न्यादर्श का 65.21 प्रतिशत भाग नवाचारी अभिवृत्ति के उच्च स्तर से संबंधितहैं, 26.08 प्रतिशत भाग नवाचारी अभिवृत्ति के मध्यम स्तर से संबंधित है 08.69 प्रतिशत अभिवृत्ति निम्न स्तर से संबंधित है अर्थात नवाचार के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की पायी गयी लेकिन सर्वाधिक अभिवृत्ति61 तथा इससे अधिक पायी गयी है । जो उच्च स्तर की अभिवृत्ति को दर्शाता है ।

अतः इस तालिका से स्पष्ट होता है कि मदरसे के अधिकांश शिक्षक नवाचार के प्रति उच्च स्तर की अभिवृत्तिरखते है ।

2- शोध कार्य के द्वितीय उद्देश्य मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलनाकरने के लिए शिक्षकों से प्राप्त आंकड़ों को प्रशिक्षित एवं प्रशिक्षित के आधार पर व्यवस्थित कर सर्वप्रथम प्राप्तांकों की प्रसामान्यता तथा प्रसारणों की समरूपता की अवधारणों की जांच की गई। प्रसामान्यता तथा प्रसारणों की समजातीयता की अवधारणों की संतुष्टि होने परt-परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधि की सहायता से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है -

**तालिका क्रमांक-05**

**प्रशिक्षिण के आधार पर शिक्षकों का नवाचारी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति फलांकों की प्रसामान्यता का परीक्षण**

| विवरण | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | सांख्यिकी | मानक त्रुटि |
| शिक्षक | प्रशिक्षित | विषमता | -.606 | .347 |
| | | ककुदता | -.478 | .681 |
| | अप्रक्षित | विषमता | -.161 | .354 |
| | | ककुदता | -.466 | .695 |

**आकृति-01**

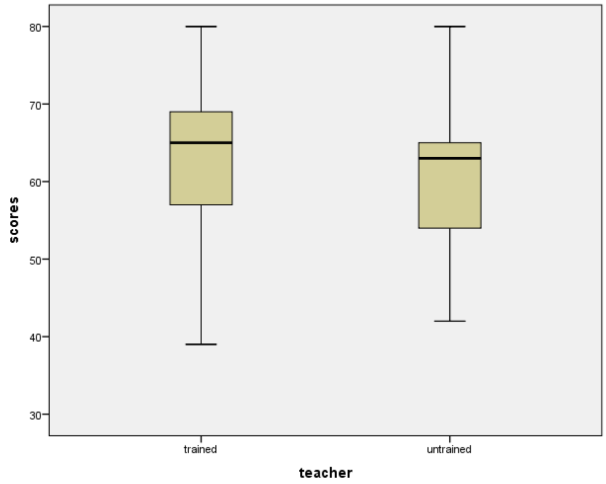


उपरोक्त तालिका क्रमांक-05 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मदरसे के प्रशिक्षित शिक्षकों के विषमता का सांख्यिकी मान -.606 परिलक्षित हो रहा है। ककुदता का सांख्यिकी मान -.478 है जो की उसकी मानक त्रुटि 0.681 से कम है। इसी प्रकार मदरसे के अप्रक्षित शिक्षकों के विषमता का सांख्यिकी मान-.161 है, ककुदता का मान -.466 है जो की उसकी मानक त्रुटि 695 से कम है।
आकृति 1 में अंतर के वितरण का बाक्स प्लाट देखने पर स्पष्टहै कि वितरण में उच्च whisker के ऊपर अथवा निम्न whisker के नीचे कोई बिन्दु नहीं होने से आउटलियर नहीं है। साथ ही साथ, माध्यिका रेखा बॉक्स के ठीक बीचो-बीच है तथा ऊपर और नीचे के whiskers लगभग समान दूरी पर स्थित है, अर्थात वितरण में सममितता अवलोकित हो रही है।

उपरोक्त सभी परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि मदरसे के प्रशिक्षित और अप्रक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों की अभिवृत्ति की प्रसामान्यता की अवधारणा संतुष्ट होती है।

**तालिका क्रमांक-06**

**मदरसे शिक्षकों की प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित के आधार नवाचारी शिक्षण अभिवृत्ति फलांकों की प्रसरणों की समजातीयता का परीक्षण**

| | | लेविन सांख्यिकी | स्वतंत्र्यांश1 | स्वतंत्र्यांश2 | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| नवाचारी अभिवृत्ति फलांक | माध्य आधारित | .000 | 1 | 90 | .999 |

तालिका क्रमांक-06 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के नवाचारी अभिवृत्ति फलांकों के लेविन परीक्षण का सांख्यिकी मान .000 है । जिसका स्वतंत्र्यांश(1, 90) पर सार्थकता मान .999 है। यह मान 0.01 से अधिक है, इसलिए

सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना, *मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है* निरस्त नहीं की जा सकती है। फलस्वरूप कहा जा सकता है कि मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकोंके प्रसरण की समजातीयता संतुष्ट होती है।

चूंकि प्रशिक्षण के आधार पर मदरसे के शिक्षकों की प्रसामान्यता तथा प्रसरणों की समजातीयता की अवधारणा संतुष्ट होतीहै अतः t-परीक्षण के कल्पित प्रसरण समजातीय निर्गमन को व्यवहार में लाकर परिणामों की विवेचना की गई है।

**तालिका क्रमांक-07**

**मदरसा शिक्षकों की प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित के आधार नवाचारी शिक्षण अभिवृत्ति फलांकों का t-परीक्षण**

| | | लेविन परीक्षण की सांख्यिकी | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | F | सार्थकता | t | df | द्विपुच्छीय सार्थकता मान |
| प्रशिक्षण के आधार पर | Equal variances assumed | .000 | .999 | 1.049 | 90 | .297 |

तालिका क्रमांक -07 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि t-टेस्ट कि आउटपुट देखने पर लेविन की सांख्यिकी (F=.000, p=.999>0.01) है, सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है । इसका अर्थ है कि शून्य परिकल्पना "मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि मदरसे के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति समान अभिवृत्ति रखते हैं।

## शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं-

- मदरसे के शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति के स्तर का अभिवृत्ति मापनी द्वारा एकत्रित आंकड़ोंके विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुआ कि मदरसे के शिक्षक नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।
- प्रशिक्षण के आधार पर मदरसे के शिक्षकों नवाचारी शिक्षण अभिवृत्ति की तुलना करने पर पाया गया कि प्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण अभिवृत्ति क माध्य फलांक, अप्रशिक्षित शिक्ष कों की नवाचारी शिक्षण विधियों के अभिवृत्ति के माध्य फलांक से अधिक है, परंतु यह अंतर सार्थक नहीं है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मदरसे के प्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रति अभिवृत्ति अप्रशिक्षित शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण अभिवृत्ति की तुलना में सार्थक अंतर नहीं है एवं इन पर प्रशिक्षण का न्यूनतम प्रभाव पड़ता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची


- अलजुनैद, एस. एम. के. एंड हुसैन, डी. आई. (2005). एस्ट्रेनज फ्रॉम दा आइडियल पास्ट: हिस्टोरिकल एजुकेशनऑफ़ मदरसा इन सिंगापूर, जर्नल ऑफ़ मुस्लिम माइनॉरिटी अफेयर्स, 25(2), 250-260.
- असमा, एस. एंड शाज़िल, टी. (2015). रोल ऑफ़ मदरसा एजुकेशन इन एम्पोवेन्मेंट ऑफ़ मुस्लिम्स इन इंडिया जर्नल ऑफ़ हुमानिटीस एंड सोशल साइंस, 20(2), 10-15.
- अख्तर, डब्लू. (2012). अंडरस्टैंडिंग मदरसा एजुकेशन एंड इट्स इम्पैक्टअ केस स्टडी ऑफ़ कछ ( अटोक) रिजन इन पकिस्तान, पी.एच. डी. थीसिस, ब्रोद् फोर्ड सेंटर फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट ब्रोद् फोर्ड विश्विद्यालय
- कुमार, आर. एंड रावत, एस. के. (2015). अ स्टडी ऑन दी एटीटयूड ऑफ़ मुस्लिम कम्युनिटी टुवर्ड्स मॉडर्नाइज़ेशन ऑफ़ मदरसा एजुकेशन इन दा स्टेट ऑफ़ बिहार, जर्नल आफ इंटरनेशनल अकादमिक रिसर्च फॉर मल्टीडिसीप्लिनारी, 2(12), 248-255.

- कासमी, एम. एस. (2005). मदरसा एजुकेशनल फ्रेमवर्क: मर्कज़ुल मारिफ एजुकेशनल एंड रिसर्च सेंटर इन एसोसिएशन विद मानक पब्लिकेशन, मुंबई, पृष्ठ संख्या-13.
- चौधरी, ए. क्यू. एस. ए. (2008). डेवलपमेंट ऑफ़ मदरसा एजुकेशन इन असाम सिंस इन्दिपेंडेन्स विद स्पेशल रेफरेंस टू बराक वैली रीजन, पी.एच.डी. थीसिस, (अप्रकाशित), शिक्षा विभाग. अलीगढ विश्विद्यालय.
- ज़फ़र, एए प्रोग्रेसिव मदरसा इन द हर्ट ऑफ उत्तर प्रदेश .(2011) ., इंडिया टूडे, नई दिल्ली,.नवंबर30
- झिंगरन, एस. (2005, 31 दिसम्बर). मदरसा मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 5540-5542.
- पान, ए. (2014). अ स्टडी ऑफ़ प्रोफेशनल कमपेटेनसी इन रिलेशन टू सेल्फ इफ्फीससी ऑफ़ मदरसा टीचर्स इन वेस्ट बंगाल, इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एजुकेशन, 3(4), 26-31.
- जयरथपरिपेक्ष् ,दिल्ली में लड़कियों के स्वतंत्र मदरसों का जेंडर परिपेक्ष्य के अंतर्गत एक शोध अध्ययन.(2011) .एस ,य ,(3)31 , 64-54
- नाज़नीन, एस. (2014). ज्ञान और मूल्य-मदरसा शिक्षा के सन्दर्भ में, परिपेक्ष्य, 34(4), 38-50.
- सिकंद, वाई. (2005). रेफोर्मिंग दी इंडियन मदरसा कंटेम्परोरी मुस्लिम वौइस, एशिया पसिफ़िक सेंटर फॉर सिक्यूरिटी स्टडीज, 117-143.
- साल्टा, केएवं टोजुगर्की ., सीएटिट्यूड टूवर्ड्स केमिस्ट्री अमंग एलेवेंथ ग्रेड स्टूडेंट्स इन हाई स्कूल इन ग्रीस.(2004) ., साइंस एजुकेशन,(4) 88 ,.547-535
- भटनागर, ए.बी ., भटनागर, एएवं भटनागर ., एम. (2013). फिजिकल साइंस शिक्षण .लाल बुक डिपो .आर :मेरठ .
- इश्तियाकरोले ऑफ़ मदरसा इन प्रोमोटिंग एजुकेशनएंड सोसिओ इकोनोमिक डेवेलपमेंट इन मेवात.(2014) .एंड अबुहुरेरा.एम , 89-84 ,120 ,प्रोसडिया सोशल एंड बिहेवियर साइंस,हरियाणा स्टेट ऑफ़ ,डिस्ट्रिक